International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

डॉ. सीमा सस्त्या

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग शासकीय महाविद्यालय, अमरपुर, जिला डिण्डौरी (म.प्र.)

सारांश

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया या जनसंचार माध्यम किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते है। देश के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में कुछ घटना घटित होने वाली समस्याओं को मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुचाया जा रहा है। लोकतंत्रीय व्यवस्था विश्व की सभी प्रचलित शासन व्यवस्थाओं में मीडिया सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। राजतंत्र, कुलीनतंत्र और तानाशाही व्यवस्था के बाद लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है। जिसका कोई विकल्प नही है। इसी कारण विश्व के अधिकांश देशो में आज लोकतंत्रात्मक व्यवस्था अपनाई गई है।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है। अतः मानव जीवन में व्यक्ति निजता के अधिकार का उल्लघंन किये बिना सोशल मीडिया के दुरूपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार – विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जा रही है, ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सकें।

शब्द कुंजी – भारतीय, लोकतंत्र, मीडिया, राजनीति, कार्यपालिका, विधिायिका, न्यायपालिका एवं जनसंचार।

प्रस्तावना

भारत देश विश्व की विशालतम लोकतांत्रीक देश हैं। लोकतंत्र का सामान्य अर्थ लोकप्रिय सम्प्रभुता पर आधारित शासन हैं। यह लोकतांत्रीक व्यवस्था में जनता के लिए और जनता द्वारा शासन होता है। लोकतांत्रीक व्यवस्था में जनता के विविध अधिकार व स्वतंत्रताएं प्राप्त होती है, जिसमें भाषण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित कर ली है। मीडिया अथवा जनसंचार के माध्यम से किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिंब होती है। भारत देश के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक फलक पर क्या कुछ घटित हो रहा है। जहां तक मीडिया की बात है, इससे हमारा अभिप्राय व्यापक स्तर पर सूचनाओं के सम्प्रेषण में लगे माध्यमों से है, दूसरे शब्दों में सूचना को प्रकाशन, सम्पादन, लेखन अथवा प्रसारण के कार्य में प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों से आगे बढ़ने की कला की मीडिया कहते है। यदि गहनता से इस पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि मीडिया दो तरह की हैं – प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया। पत्र–पत्रिकाएं, पम्पलेट आदि प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत आते हैं। वहीं रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, फिल्म व ई–मेल आदि इलेक्ट्रानिक मीडिया के भाग हैं।

वर्तमान समय में सूचना प्रोद्योगिकी के विकास के काल में प्रेस शब्द का अर्थ अति व्यापक हो गया है। आज प्रेस का अर्थ समाचार के समस्त साधनों जिसे मीडिया कहते है। दूसरे शब्दों में समाचार संवहन की वाहक गाड़ी के 'प्रिन्ट मीडिया' व 'इलेक्ट्रानिक मीडिया' नामक दो पहिये है। पिछले कुछ वर्षों में प्रेस ने जन–जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। तहलका, बोफोर्स, 2–जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेलथ घोटाला, कोयला ब्लॉक आवंटन घोटाला आदि बहुत से घोटाला आदि बहुत से घोटालों का पर्दाफाश करने व इनमें संलिप्त नेताओं को बेनकाब करने में प्रेस

ने भूमिका निभायी है। तहलका काण्ड के सन्दर्भ किये गये पर्दाफाश के संबंध में 'कलम के सिपाही' 'वतन के सिपाही' की तूलना की है।

भारतीय लोकतंत्र का मूलाधार है – स्वतंत्रता, समानता और बन्धत्व और जहां कही भी विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं होती है, वहां लोकतंत्र असफल हो जाता है। इस स्वतंत्रता का सही ढंग से प्रयोग मीडिया द्वारा ही किया है। देश के सभी कोनों और घटनाओं पर इसकी पैनी दृष्टि होने के कारण ही शक्तिशाली शासक भी इसके महत्व एवं शक्ति की उपेक्षा नहीं कर पाते। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण मिलते है, जब इसकी शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने इसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है। आज भी इसकी ताकत के सामने बड़े से बड़ा नेता, उद्योगपति आदि सभी नतमस्तक है। जन जागरण में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है – बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का अभियान, एड्स जागरूकता फैलाने का कार्य लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करना, बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए प्रयास करना, धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना जैसे नमक कार्यों में इसकी सराहनीय भूमिका रही है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर आधारित है। प्रत्येक शोध अध्ययन को करने के पीछे कुछ उद्देश्य निहित होते है और वह उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए यह आवश्यक है कि शोध कार्य को योजनाबद्ध तरीके से किया जाये। लोकतंत्र में मीडिया की चयन सविचार निदर्शन विधि के आधार पर चयन किया गया है। **"भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका"** का अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों पर आधारित है।

द्वितीयक समंक :– द्वितीयक समंकों का संकलन, पुस्तकों, पत्र–पत्रिका, वार्षिक रिपोर्ट, जनगणना, रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी विभाग, तहसील कार्यालय, विकासखण्ड, कार्यालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय रिपोर्ट, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री एवं संबंधित विषय में विगत वर्षों से प्रकाशित लेखों इत्यादि से समंकों का संकलन किया गया है।

प्राथमिक समंक :– प्राथमिक समंकों का संकलन धार जिले में 13 विकासखण्ड, 7 विधानसभा पद, 1 ससंद सदस्य, 761 ग्राम पंचायत, नगर परिषदों एवं नगर पालिका क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न राजनीतिक दलों की महिला कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों में दैव निदर्शन विधि द्वारा कुल 300 जनजातीय महिलाओं नेत्रियों का चयन किया जायेगा। दैव निदर्शन विधि से चयनित जनजातीय महिला उत्तरदाताओं से राजनीति में भूमिका एवं ग्रामीण विकास के अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर ग्रामीण विकास में जनजातीय महिलाओं की भूमिका सम्बन्धित समंक संकलीत किये जायेगें।

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया के उद्देश्य – भारतीय लोकतंत्र में मीडिया के महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

- जनसंचार जनसमुदाय तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन को पहुंचना।
- लोकतंत्रीय मीडिया के माध्यम से देश–विदेश की जानकारी, डाटा को एक साथ लाखों लोगों तक पहुंचाना।
- मीडिया द्वारा राष्ट्रऔर समाज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को पहुंचाना।
- लोकतंत्र में कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका के अतिरिक्त जनसंचार मीडिया चौथा स्तम्भ के रूप में भूमिका निभाना।

मीडिया की आवश्यकता एवं प्रासंगिता – भारतीय मीडिया और राजनीति के अंतगर्त राष्ट्रीय आन्दोलन के माध्यम से इसके विस्तृत संबंधों को दर्शाने का प्रयास किया जाता है। विशेषज्ञों का मनना है कि किसी भी देश के राष्ट्रीय आन्दोलन को मीडिया के द्वारा वृहद स्तर पर सहयोग प्रदान किया जाता है और भारतीय मीडिया ने भी इस कार्य को बेहतर तरीके से करने का कार्य सम्पादित किया है। राष्ट्रीय आन्दोलन में पत्रकार और राष्ट्रवादी दोनों में एक

ही व्यक्ति कार्यरत था और वह था एक भारतीय जिसे अपने देश और नागरिकों के लिए स्वतंत्रता प्राप्त कर गौरव हासिल करना था। इस कार्य में मीडिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन बखूबी निभाया।

भारत में संचार माध्यम – एक स्वस्थ्य लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि वह की मीडिया सशक्त निष्पक्ष एवं दबाव मुक्त हो, चूंकि लोकतंत्र में जनहित को वरीयता दी जाती है, अतएव लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसकी जिम्मेदारी कहीं अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि मीडिया को जनता की आवाज माना है, इसलिए उससे निष्पक्षता एवं निर्भीकता की अपेक्षा लोकतंत्र के रक्षक के रूप में की जाती है। इसका ष्पिक्ष एवं तटस्थ होना तथा सच से प्रतिबद्ध होना जरूरी है। लोकतंत्र में मीडिया को चतुर्थ जनशक्ति का स्थान इस लिए दिया गया है कि यह जनहितों की पैराकरी करते हुए सदैव लोकतंत्र को सार्थक आयाम देने के लिए कटिबद्ध रीता हैं। भारतीय मीडिया ने अपने नैतिक उद्यमों, मूल्य आधारित पत्रकारिता, गम्भीर चिन्तन और सटिक बयानी से विशिष्ट पहचान बनाई है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए अति आवश्यक है।

लोकतंत्र व मीडिया समस्या व समाधान – इस आलेख में सोशल मीडिया उसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव, भारत में स्थिति, सोशल मीडिया के विनियमन पर विस्तृत जानकारी इस प्रकार है–

1. प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता हैं। उदाहरण – फेसबुक, ट्विटर आदि इस संपूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती है।
2. यह पूरी प्रक्रिया सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है। जहां विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोग के बहु–विविध तरीकें और तकनीकी निर्भरता ने सामाजिक संजाल स्थल को विभिन्न प्रकार के खतरों के प्रति सुभेद्य किया है।

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया का महत्व – भारत देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था लागू है जिसे जनतांत्रिक अथवा प्रजातांत्रिक व्यवस्था भी कहा जाता है। यह चार स्तम्भों पर खड़ा है– सरकार, विधायिका, न्यायपालिका तथा मीडिया। लोकतंत्र की सफलता के लिए इन चारां स्तम्भों का अमूल योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण है। मीडिया में लोकतंत्र के लिए बेहतर दुनिया और भविष्य बनाने की सर्वाधिक क्षमता और शक्ति है। यह विभिन्न घटकों का समुच्चय है। तथा उसके सभी घटक मिलकर कार्य करते है, लोकतंत्र की स्थिरता तथा विकास में मीडिया की भूमिका बहुत ही अहम है। राजनीति खेल, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, विस्थापन, आपदाएं, सामाजिक स्वास्थ्य, स्थानीय समस्याएं जैसे मुददो को वरीयता देकर तथा इनके संबंध में जनजागृति कर मीडिया ने लोकतंत्र के मायने ही बदल दिये। लोकतंत्र में जनता और सरकार के मध्य सम्पर्क, अटूट रिश्ता एवं समन्वय लाभदायक होता है। कुछ वर्ष पूर्व जनता और सरकार के मध्य सम्पर्क के अभाव के कारण दूरी बनी हुई थी उसे मिटाने का कार्य मीडिया ने किया है। यदि कोई कोई घटना जन विरोधी है, तो जनता की आवाज सरकार तक पहुंचाने का कार्य इसी के माध्यम से किया जाता है।

ज्नसंचार के माध्यम से आज अनेक रूपों में मौजूद हैं। जो मीडिया 30–40 वर्ष पूर्व केवल दूरदर्शन के नाम से लोकप्रिय थी, आज इतनी विकसित हाक गयी है। यह दूरदर्शन नर चलने वाली, प्रसारित की जाने वाली हर विद्या के आधार पर चैनलों के कई प्रकार हो गए है। समाचार चैनल, इग्नू की स्वयंप्रभा 40 डीटीएच चैनलों का एक समूह, माडलिंग चैनल, केवल गानों के लिए चैनल, धारावाहिक के लिए चैनल, फिल्मों के लिए चैनल, विभिन्न प्रकार के भोजन बनाने से संबंधित चैनल, खेलों के नये चैनल उनमें भी नये खेलों के लिए विशिष्ट चैनल आदि।

निष्कर्ष – भारतीय लोकतंत्र में मीडिया के माध्यम से किसी भी समाज एवं राष्ट्र की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते है। यह सूचनाओं एवं संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। यह जन संदेशों के माध्यम से की जाने वाली सामाजिक अन्तःक्रिया है। इसे पहले प्रेस के नाम से जाना जाता था, एवं

इसका कार्य विश्वभर में घटित होने वाली सूचनाओं का संग्रहण कर सर्वजन को सुलभ करना था। वर्तमान समय के साथ इसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ तथा हाल ही इस समय में अन्तःक्रिया का नामकरण मीडिया के रूप में हो गया।

वर्तमान समय में मीडिया का शाब्दिक अर्थ है – माध्यम, साधन या सेतु। मीडिया शब्द का प्रयोग जनसंचार के माध्यम अर्थात रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाओं इत्यादि के लिए किया जाता है। यह किसी भी समाज या राष्ट्र का प्रतिबिम्ब होता है तथा राष्ट्र व समाज के राजनीति, आर्थिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रतिबिम्बत करती है। विभिन्न देश में होने वाली राजनीतिक व सामाजिक क्रांतियों में इसकी महव्तपूर्ण भूमिका रही है, इसी कारण ब्रिटिश विचारक एडमण्ड वर्क ने इसे लोकतंत्र का "चौथा स्थम्भ" कहा है। प्रजातंत्र का मूलधार है– स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व व जहां कहीं भी विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गयी है वहां इस स्वतंत्रता का पूर्ण और सही ढंग से प्रयोग मीडिया द्वारा ही किया जाता है। देश के सभी कोनों और घटनाओं पर इसकी पैनी दृष्टि होने के कारण ही शक्तिशली शासक भी इसके महत्व एवं शक्ति की उपेक्षा नहीं कर पाते।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। वर्तमान समय में प्रत्येक न्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है। अतः मानव जीवन में व्यक्ति निजता के अधिकार का उल्लघंन किये बिना सोशल मीडिया के दुरूपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार – विमर्श कर नए विकल्पों की खेज की जा रही है, ताकि भविष्य में इसके संभापित दुष्प्रभावों से बचा जा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत में संसदीय लोकतंत्र की पसम्परा – डॉ. सुनील कुमार तिवारी।
2. राजकुमार, (2009), शासन और राजनीति, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. राजकुमार, (2014), लोकतंत्र में राजनीति के मायने, कथा–क्रम, जुलाई।
4. सिंह, रानी एवं तिवारी, डॉ. संध्या (2023), भारतीय राजनीति में मीडिया की भूमिका, IJAR, 2023; 9(7): 339-343.
5. मित्र, राम (1992), "कास्ट पोलराईजेशन एण्ड पॉलिटिक्स" सिण्ढीकेट पब्लिकेशन, पटना।
6. रंजन, राजीव (2006), चुनाव लोकसभा और राजनीति, ज्ञान, रंगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. रंगराजन, एम. (2006), राजनीतिक व्यवस्था में संक्रमण 2004 के आम चुनावों के पश्चात भारत, शोधार्थी, अंक–2, सं. –1, जनवरी–मार्च।
8. मैकडानालड, नील ए. (1963),पार्टी पर्सपेक्टिज : कम्परेटिव पॉलिटिक्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।
9. दयाल, रघु (2010), द सारी स्टेट ऑफ पब्लिा हेल्थ, द न्यूज 2 अप्रैल।
10. जैन, रमेश (2003), जनसंचार एवं पत्रकारिता, मंगलदीप प्रकाशन, जयपुर।
11. सिंह, देवेप्द्र (1994), दूरदर्शन एवं स्वास्थ्य शिक्षा भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 13, अंक 1, जनवरी–जून भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, निराला नगर, लखनऊ।
12. तिवारी, अर्जन (2005), जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, जय भारती प्रकाशन, इलाहबाद।